शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'संतप्त' आत्मकथा में दलित जीवन की त्रासदी

डॉ. संतोष रोडे
सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
फ्रर्ग्युसन महाविद्यालय (स्वायत्त)
शिवाजीनगर, पुणे, महाराष्ट्र, भारत

दलित आत्मकथा दलित आंदोलन और लेखन की उपज है। दलित साहित्य का वैचारिक आधार डॉ. आम्बेडकर का जीवन संघर्ष तथा ज्योतिबा फुले तथा महात्मा बुध्द का दर्शन उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि हैं। आत्मकथा यानी अपनी कथा 'आत्मकथा' एक आत्मपरक विधा है। इसमें लेखक की आत्मा निहित रहती हैं। इसमें लेखक स्वयं अपनी आपबीती 'मैं', शैली में कहता है। एक तरह से यह रचनाकार का स्वयं से साक्षात्कार होता है। आत्मकथा व्यक्ति केन्द्रित विधा हैं। आत्मकथा के माध्यम से रचनाकार अपनी कथा प्रस्तुत करता है। आत्मकथा लिखना अर्थात आपको पूरी तरह से खोलकर पाठकों के समक्ष रख देना है। आत्मकथा सबसे पहले ईमानदारी की मांग करती है, आत्मकथाकारों को अपने आप के प्रति ईमानदार होना आवश्यक होता है। बिना ईमानदारी के, आत्मकथा की कल्पनां नहीं की जा सकती है, प्रसिध्द रचनाकार मन्नू भंडारी ईमानदारी की और इंगीत करती हुई कहती है, "हमारे यहाँ बहुत ईमानदारी से लेखकों के व्यक्तिगत जीवन का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने का प्रचलन ही नहीं हैं और न ही लेखक खुद ही बहुत ईमानदारी से वह लिख पाते हैं तो यह संकोच की वह क्या सोचेगा। इस लिखे पर कहीं मित्रता ही समाप्त हो जाए। अब अधिकतर लेखक अपनी रचनाओं में जरा भी प्रतिकूल समिक्षा बर्दाश्त नहीं कर पाते तो व्यक्तिगत जीवन के दबे-ढके धुंधले पक्षों का अनावरण बर्दाश्त कर सकेंगे भला ?"[1] उनके कथन से स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ लेखकों में ईमानदारी का अभाव है।

दलित कथाकार सूरजपाल चौहान दलित साहित्य जगत के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। सूरजपाल चौहान ने चुनिंदा रचनाओं का सृजन कर दलित साहित्य में अपनी महत्वपूर्ण जगह बना ली। सूरजपाल चौहान उन साहित्यकारों की कतार में जा बैठे हैं जिन्होंने लंबे अरसे से दलित साहित्य में अपनी पैठ बनाई है। सूरजपाल चौहान के रचना संसार में 'हैरी कब आएगा', कहानी संग्रह 'तिरस्कृत' आत्मकथा 'संतप्त', 'प्रयास' और 'विश्वास क्यों करूँ' बालगीत बाल कवितायें बच्चे, सच्चे-किस्से, मधुर बालगीत आदि हैं।

सूरजपाल चौहान की आत्मकथा संतप्त पाठको कों विचार करने की लिए विवश कर देती है। 'संतप्त' दलित जीवन की त्रादगी को अभिव्यक्त करता है। सूरजपाल चौहान ने अपनी आत्मकथा 'संतप्त' में संवेदनशील विषय पर बेहिचक कलम चलायी तथा अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति दी। सूरजपाल चौहान 1981 में टेलीफोन अनुभाग में कार्यरत थे जब अनुभाग के उपप्रबंधक के.सी. मल्होत्रा को पता चला कि चौहान एस.सी. है, तब से मल्होत्रा का सूरजपाल चौहान के प्रति देखने का नजरिया एकदम बदल जाता हैं। सूरजपाल चौहान एक दो बार के.सी. मल्होत्रा को समझाते है, पर कोई असर नहीं पडता, सूरजपाल चौहान के.सी. मल्होत्रा से कहते हैं, "सर मैं आपका सबारडनेट हूँ दूसरे साथियों के सामने आप मुझे ... मैं

अपनी बात पूरी नहीं कह पाया था कि उन्होंने आँखें दिखाते हुए मुझसे कहा क्या करेगा तू औकात में रहा कर तुझे पता नहीं मैं, पाकिस्तानी हूँ बडों-बडों को ठीक किया है। मैं प्रबंधक के.सी. मल्होत्रा की बात सुनकर भौचक होकर रह गया था। उस समय तो मैं वहां से चला आया अपनी सीट पर आकर बैठ गया मैं बडी असंमजस की स्थिति में था।''[2]

आज भले ही कोई एस.सी., एस.टी. वर्ग के अधिकारी कितने ही बड़े पद पर क्यों न हो अपमानजनक पस्थितियों का सामना करना पडता है। सूरजपाल चौहान को अनुभाग में सबॉरडनेट पद पर होते हुए भी जातीयता, अपमानजनक परिस्थितियों का सामना करना पडता है, तो दीन-हीन गरीब, बेबस लोगों की क्या अवस्था होती होगी। विभाग में ही मल्होत्रा के बाद श्रीमती शर्मा का भी कैटेगिरी को लेकर सूरजपाल से बिगाड़ होता है। सूरजपाल चौहान कहते हैं कि एकदम सरल स्वभाव की थी श्रीमती शर्मा। ऑफिस का कोई काम हो तो वह चुटकी में हल करती थी। जब सूरजपाल की जाति का पता चला तब उनका व्यवहार एकदम बदल गया था। श्रीमती शर्मा के व्यवहार से अब मैं भी कभी-कभी झुंझलाकर रह जाता था। कई दिनों तक तो मैं यही सोचता रहा कि हो सकता हैं श्रीमती शर्मा के साथ कोई परिवारीक समस्या होगी, लेकिन ऐसा कुछ नही था। ऑफिस में काम कर रहे वह दूसरे साथियों से पहले की तरह सहज बोलती थी। एक दिन सूरजपाल साहस करके मॅम से पूछते हैं, "मॅम क्या हुआ मुझसे कोई भूल हो गई है ? सूरज तुमने मुझे अपने भंगी होने की बात पहले क्यों नहीं बताई... मैं भंगी चमारों से बात नही करती। ये सभी गंदे होते हैं। श्रीमती शर्मा अपनी बातें एक रौ में कह गई थीं। उसकी बातें सुनकर जैसे मुझे काठ मार गया हो, मुझसे कुछ बोलते ही नहीं बना। मेरे मुंह से इतना ही निकला था मॅम अभी कुछ दिनों पहले तक तो मैं दूसरे साथियों कि तरह आपको अच्छा लगता था यह जानकर कि मै एस.सी. हूँ तो गंदा लगने लगा।"[3]

सूरजपाल को अपने विभाग के सहपाठी के साथ दलित होने का अपमान सहन करना पडा। सुरेश, कर्मशील भारती और सूरजपाल दिल्ली से अपने गाँव फुसावली जाते हैं। रास्ते में गाँव की महिला और उसकी बेटी गाड़ी में बैठती हैं। सुदेश, कर्मशील भारती और सूरजपाल चौहान में गपशप होती है। सूरजपाल कहते है। अच्छा तो तुम गाँव के रिश्ते से मेरी बहन ही लगी। मैं भी फुसावली का हूँ। मैंने भी हँसते हुए कहा था। हाँ भैया मैं तेरी बुआ बहन ही लगी। वह गाडी में बैठे-बैठी खुश थी। महिला सवाल करती है, गुप्ता हो या अग्रवाल ? सूरजपाल यह सुनकर मंद-मंद मुस्कराते हैं और कहते हैं मैं ना अग्रवाल हूँ ना गुप्ता.... वह महिला कहती राजपूतों में से होंगे कहीं न कहीं। मैं लोधा राजपूत नहीं हूँ मैं भंगी बस्ती का हूँ। उसके सीधे सपाट उत्तर से महिला अवाक रह जाती है।"[4]

यह सुनकर महिला के चेहरे पर सर्दी के दिनों मे भी पसीने की बूँद स्पष्ट दिखाई दे रही थी। और वह महिला कहती है "अब तो दुनिया बदल गई है। कहाँ रह गए हैं छुआछूत। पता ही नहीं चलता कौन किस जाति का है।"[5]

आज भी गाँवों में दलितों के प्रति अमानवीय मानसिकता दिखाई देती हैं। दलित व्यक्ति कितने ही बड़े ओहदे पर पहुँच जाए, सवर्ण समाज के लोंगो का नजरिया कुछ अलग ही दिखाई देता है। यह कडवा सच है। सूरजपाल चौहान अपने गाँव फुसावली पहुँचते हैं। तदुपरांत जब अपनी पत्नी को खुशहाली कहने या बताने के लिए जब वे ठाकुर के घर फोन लगवाने के लिए जाते हैं, वहां ठाकुर द्वारा सूरजपाल चौहान

को दलित होने का अपमान सहन करना पडता है। जब सूरजपाल ठाकुर के घर जाते हैं, तुरंत मनवीर रोकते हैं, सूरजपाल चौहान एवं मनबीर दस-पंद्रह मिनट तक सामने पडी कुसियों के पास खडे रहते हैं। इस दौरान ठाकुर एक बार भी खाली पडी कुर्सियो पर बैठने के लिए नहीं कहते। ठाकुर और मनबीर में बातचीत होती है। ठाकुर कहते हैं, "क्यों रे मनबीरा हरिजनों में आंबेडकर भवन के बनने पर बात बनी या ना बनी। मनबीर ने स्वीकृति में अपना सिर हिलाया। ठाकुर को टोकते हुए सूरजपाल कहते हैं, ठाकुर तुम्हें पता है, 'हरिजन' शब्द बोलना अब कानूनन जुर्म है ? तो का बोले ? ठाकुर ने त्योरियां चढाते हुए कहा मेरी समझ से कुछ ज्यादा ही पढा-लिखा दिखे हे ये गाम है ..... यहाँ ना जाने कोई तेरो दलित बलित यहाँ तो चुहड़ों चमारों को हरिजन कहकर पुकारे है"[6]

अतः सूरजपाल चौहान ने अपनी आत्मकथा 'संतप्त' में अपने बचपन से लेकर आज तक की अपनी सिलसिलेवार कहानी अभिव्यक्त की है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 हंस, मार्च 2010, पृष्ठ 54
2 सूरजपाल चौहान, संतप्त, पृष्ठ 50
3 वही, पृष्ठ 53
4 वही, पृष्ठ 64
5 वही, पृष्ठ 64
6 वही, पृष्ठ 66